egkRek xka/kh vUrjjk"Vªh; fgUnh fo'ofo|ky;] o/kk ¼egkjk"Vª½
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अन्तर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatama Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No.3 of 1997)
नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

दिनांक 11.09.2015

स्मरण : मुक्तिबोध

कविता और आलोचना के प्रतिमान बदलने वाले रचनाकार थे मुक्तिबोध : प्रो.संतोष भदौरिया

मुक्तिबोध मध्यवर्ग के प्रंपचों का खुलासा करते हैं : डॉ. प्रेमशंकर

मुक्तिबोध के समय के यथार्थ को पकड़ने के लिए उनकी रचनाओं को फिर-फिर पढ़ने की आवश्यकता है। उनके लेखन में मौजूद बिडम्बना बोध, अन्याय और शोषण से उपजता है। उनकी रचनाओं का मुख्य स्वर आत्मसंघर्ष का है। बराबरी के समाज की स्थापना उनकी चेतना के केंद्र में है। मुक्तिबोध स्वयं मानते थे कि ब्यक्ति की मुक्ति अकेलेपन में नही है। उनकी रचनाएं वर्तमान जीवन एवं परिवेश की विसगंतियों को पूर्णतः अभिव्यक्ति करती हैं। सर्वहारा के सघर्षों के एकजुट न हो पाने की वेचैनी उनकी रचनाओं और विचारों में स्पष्ट तौर पर दिखती है। उक्त बातें मुक्तिबोध की ५१वीं पुण्यतिथि के अवसर पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में **'स्मरण : मुक्तिबोध'** कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए डॉ. प्रेमशंकर ने कहीं।

bykgkckn dsUnz
24/28-सरोजनी नायडू मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-211001, उ.प्र., भारत
फोन- 0532-2420700, फैक्स : 0532-2424442, मो. 8004926360 ईमेलः mgahvalld@gmail.com वेबसाइट : hindivishwa.org

इलाहाबाद केंद्र के प्रभारी, प्रो. संतोष भदौरिया ने अपने प्रस्तावना वक्तव्य में कहा कि आज छायावाद की प्रसिद्ध रचनाकार महादेवी वर्मा की भी पुण्यतिथि है। उन्होंने स्त्री की पीड़ा एवं उसकी मुक्ति की आकांक्षा को **'श्रृंखला की कड़ियाँ'** पुस्तक में अभिव्यक्त किया है। उसे बार-बार पढ़ने की जरूरत है। मुक्तिबोध को उन्होंने कविता और आलोचना के प्रतिमान बदलने वाला रचनाकार कहा। मुक्तिबोध में ही यह साहस था कि उन्होंने चांद के मुंह को भी टेढ़ा कहकर सौंदर्य की प्रचलित अवधारणाओं को प्रश्नांकित किया। मुक्तिबोध की रचनाएं आज इसलिए भी मानीखेज़ है क्योंकि 'अंधेरे में' की शोभायात्रा के खलनायक आज नायकत्व प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए उनकी ओर मुख़ातिब होना हमारी जरूरत भी है।

'स्मरण : मुक्तिबोध' कार्यक्रम के दूसरे हिस्से में उनकी प्रसिद्ध कविताओं **'अंधेरे में'**, **'भूल गलती'**, **'ओ मेरे आदर्शवादी मन'** पर बने वृत्तचित्रों का प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम के अन्त में मणिकौल की चर्चित फिल्म 'सतह से उठता आदमी' को छात्र/छात्राओं ने खूब सराहा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सपना सिंह द्वारा किया। इस दौरान डॉ. विधु खरे दास, डॉ. सालेहा जर्रीन, डॉ. अनुपमा राय, सुश्री सूर्या ई.वी. सहित बडी संख्या में छात्र/छात्राएं उपस्थित रहे।

प्रस्तुति
इलाहाबाद केंद्र